॥ॐ॥
॥श्री परमात्मने नमः ॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

॥ श्री निर्वाणदशकम् ॥

विषय सूची

॥ अथ निर्वाणदशकम् ॥ 3

भवदीय :

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष
श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय: ॥

॥ श्री हरि ॥
॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ अथ निर्वाणदशकम् ॥

(सिद्धान्तबिन्दुः)

श्रीमद भगवत पूज्यपाद आद्य शङ्कराचार्य प्रणीतम्

भुजङ्गप्रयातं छन्दः

न भूमिर्न तोयं न तेजो न वायु| न खं नेन्द्रियं वा न तेषां समूहः ।
अनैकान्तिकत्वात्सुषुप्त्येकसिद्ध स्तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम्
॥१॥

मैं शुद्धात्मा भूमि नहीं हूँ, जल नहीं हूँ, तेज नहीं हैं, वायु नहीं हूँ, आकाश नहीं हूँ, इन्द्रिय नहीं हूँ और न इनका समूह हूँ। इन सबमें व्यभिचारीभाव होने के कारण यह सब मैं नहीं हैं किन्तु मॅतो सुषुप्तिअवस्था में सिद्ध (अनुभवरूप) एक अवशिष्ट केवल शिवरूप हूँ ॥ १ ॥

न वर्णा न वर्णाश्रमाचारधमा, न मे धारणाध्यानयोगायोपि ।
अनात्माश्रयाऽहंममाध्यासहानात्, तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम्
॥ २ ॥

मेरे (शुद्धात्माके) वर्ण नहीं है और वणश्रम के आचार व धर्म तथा धारणा और ध्यान, योग आदि भी नहीं हैं। मैं अनात्मरूप आश्रयवाले अहं ममाध्यास की निवृत्तिवाला एक अवशिष्ट केवल शिवरूप हैं ॥२॥

न माता पिता वा न देवा न लोका
न वेदा न यज्ञा न तीर्थ बुवन्ति ।
सुषुप्तौ निरस्तातिशून्यात्मकत्वात्
तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम् ॥ ३॥ |

मैं माता नहीं हैं, पीता नहीं हूँ, देव, लोक, वेद, यज्ञ और तीर्थ नहीं हैं। विद्वान् कहते हैं कि सुषुप्ति में निरस्त और अतिशून्य होने से एक अवशिष्ट केवल हूँ और शिवरूप हूँ ब्रह्म में ही हूँ ॥३॥

न सांख्यं न शैवं न तत्पांचरात्रम्,
न जैनं न मीमांसकादेर्मतं वा।
विशिष्टानुभूत्या विशुद्धात्मकत्वात्,
तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम् ॥ ४ ॥

मैं सांख्यमत नहीं हूँ, शैवमत नहीं हैं, पाञ्चरात्र, जैन तथा मीमांसकादि का भी मत नहीं हैं। श्रेष्ठ अनुभव द्वारा विशुद्धरूप होने से मैं एक अवशिष्ट केवल शिवरूप हूँ ॥ ४ ॥

न चोर्ध्वं न चाधो न चान्तर्न बाह्यम्,
न मध्यं न तिर्य न पूर्वापरा दिक् ।
वियद्व्यापकत्वाखण्डेकरूप
स्तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम् ॥ ५॥

मैं ऊपर नहीं हैं, नीचे नहीं हैं, अन्दर नहीं हैं बाहर नहीं। मध्य और टेढ़ा नहीं हैं। पूर्व और पश्चिमादिक दिशाये मेरी नहीं हैं। आकाशके समान व्यापक होने से मैं अखण्ड एकरूप हूँ और उसी कारणसे मैं एक अवशिष्ट केवल हूँ और शिवरूप हूँ ॥५॥

न शुक्लं न कृष्णं न रक्तं न पीतं,
न कुब्जं न पीनं न ह्रखं न दीर्घम् ।
अरूपं तथा ज्योतिराकारकत्वात्,
तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम् ॥ ६ ॥

मैं सफेज नहीं हूँ, काला नहीं हूँ, लाल नहीं हैं, पीला नहीं हूँ, कुबड़ा नहीं हैं। न मोटा हूँ न छोटा हूँ, न लम्बा हूँ न अरूप हूँ। मैं ज्योति

(प्रकाश) रूप आकार वाला होनेसे एक अवशिष्ट केवल हूँ तथा शिवरूप हूँ ॥६॥

न शास्ता न शास्त्र न शिष्यो न शिक्षा ,
न च त्वं न चाहं न चायं प्रपञ्चः ।
स्वरूपावबोधो विकल्पासहिष्णु,
स्तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम् ॥७॥

शास्ता (शासन करने वाला) मैं नहीं हैं, शास्त्र नहीं हैं, शिष्य और शिक्षा नहीं हूँ। तें नहीं हूँ, मैं नहीं हूँ और यह प्रपञ्च नहीं है। अतएव निजस्वरूप ज्ञानरूप तथा विकल्प को न सहने वाला मैं एक अवशिष्ट केवल शिवरूप हूँ ॥७॥

न जाग्रन्न मे स्वमको वा सुषुप्ति
ने विश्वो न वा तैजसः प्राज्ञको वा ।
अविद्यात्मकत्वात्रयाणां तुरीय
स्तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम् ॥ ८ ॥

जाग्रत् , स्वप्न और सुषुप्ति यह तीनों अवस्था ये मेरी नहीं है । विश्व, तैजस और प्राज्ञ यह तीनों भी अविद्यास्वरूप होनेसे यह भी मैं नहीं हूँ। मैं तो तुरीय नाम एक अवशिष्ट केवल शिवरूप हूँ ॥८॥

अपि व्यापकत्वाद्धि तत्वप्रयोगात्,

स्वतःसिद्धभावादनन्याश्रयत्वात्।
जगत्तुच्छमेतत्समस्तं तदन्यत्,
तदेकोऽवशिष्टः शिवः केवलोऽहम् ॥ ९ ॥

ब्रह्म सर्वव्यापक है, प्रसिद्धतत्वशब्दद्वारा उच्चारित है तथा स्वतःसिद्धसत्तावाला और अन्य आश्रय से रहित है। ब्रह्म से भिन्न यह समस्त जगत् तुच्छ है अतः मैं एक अवशिष्ट केवल शिवरूप हूँ ॥९॥

न चैकं तदन्यद्वितीयं कुतः स्यात्,
न वा केवलत्वं न चाकेवलत्वम् ।
न शून्यं न चाशून्यमद्वैतकत्वात् ।
कथं सर्ववेदान्तसिद्धं ब्रवीमि ॥ १० ॥

जब एक नहीं है दूसरा कहाँ से हो सकताहै ? जब केवल भाव नहीं है तो अकेवल भाव भी नहीं है और जब शून्य नहीं है तो अशून्य भी नहीं है इसलिये अद्वैतरूप होनेसे उसका (ब्रह्मका) सब वेदान्तमतों द्वारा किस प्रकार वर्णन किया जाय ॥ १० ॥

॥इति भावार्थसहितं श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं निर्वाणदशकं समाप्तम्॥

हरिः ॐ तत्सत्-ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!